https://www.AtmaDharma.com/ https://www.AtmaDharma.org/

मंगल प्रभाती :

नित्य स्मरणीय जिनागम-रत्न

https://www.AtmaDharma.com/ https://www.AtmaDharma.org/

मंगल प्रभाती :

नित्य स्मरणीय जिनागम-रत्न

संकलन एवं प्रकाशक
आध्यात्मिक प्रयोगशाला
श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर
राधावल्लभ वार्ड, करेली - ४८७२२१ (म.प्र.)

https://www.AtmaDharma.com/ https://www.AtmaDharma.org/

प्रथम संस्करण : १०००

३१ जुलाई २०१६

मूल्य : नित्य स्मरण

प्राप्ति स्थान –

आध्यात्मिक प्रयोगशाला

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर

राधावल्लभ वार्ड, करेली – ४८७२२१ (म.प्र.)

मुद्रक – पिंकी प्रिंटर्स, करेली

|| जो स्वरुप समझे बिना, पाया दुःख अनंत
समझायातत्पद नमूँ, श्री सद्गुरु भगवंत ||

अपने वचनघनों से ४५ वर्षों तक सतत घनघोर तत्त्वामृत-वर्षा से हमारी तत्त्व-शस्य हेतु बंजर हुई हृदयधरा को पुनः जीवंत कर देने वाले, निरंतर हीनता को प्राप्त इस अधम अवसर्पिणी-काल की दुर्गति को पलट उत्सर्पिणी सम उत्थानोन्मुख कर देने वाले, वर्तमान आध्यात्मिक-क्रान्ति के आद्य-सूत्रधार, जीवनशिल्पी, ऐतिहासिक युगपुरुष, हमारे जीवन के आधार पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीका समस्त मुमुक्षु समाज चिर-ऋणी है|

श्रुत-वाङ्मयके तल में छिपे अति-गुप्त एवं गूढ़ रहस्यरत्नों को निकालकर जग में लुटा देने वाले पूज्य गुरुदेव श्री का उज्ज्वल जीवन जिन-तत्त्व की आजीवन आराधना एवं प्रभावना का उत्कृष्ट आदर्श है जो हम सभी के लिए पूर्णतः अनुकरणीय भी है |

ब्रह्ममुहूर्त की मंगल-बेला में पूज्य गुरुदेव श्री प्रतिदिन जिनागम-रत्नाकर में कुछ अमूल्य वचन-रत्नों के स्मरण-पाठ द्वारा डुबकियाँ लगाया करते थे जो उनके लिए मानो आतम-स्वभाव के मंगल-प्रभाती गीत की ही तरह थे | उन्हीं जिनागम रत्नों का अपूर्व संकलन *'मंगल प्रभाती: नित्य स्मरणीय जिनागम-रत्न'* **मुमुक्षु परिवार करेली** आप सभी स्वाध्यायी साधर्मियों के हाथों में प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रमुदित है|

आइये, आप और हम इन जिनागम रत्नों का नित्य अवलोकन करें
और शीघ्र ही चैतन्य रत्नाकर के तल में डूब जायें ।

***

मुमुक्षु परिवार करेली
आध्यात्मिक प्रयोगशाला

अनुक्रमणिका

१. श्री समयसार स्तुति
२. आत्मा की सैंतालीस शक्तियाँ
३. आत्मा के सैंतालीस नय
४. श्री समयसारजी की प्रथम १६ गाथाएँ
५. अलिंगग्रहण के २० बोल
६. अव्यक्त के ६ बोल
७. २४ तीर्थंकरों के नाम
८. पंच बालयति तीर्थंकरों के नाम
९. जिनागम के १६ आने
१०. श्रीमद् राजचंद्र के दस बोल
११. श्री सद्गुरुदेव स्तुति

समयसार

श्री समयसारजी की स्तुति

हरिगीत

संसारी जीवनां भाव मरणो टालवा करुणा करी,
सरिता वहावी सुधा तणी प्रभु वीर! तें संजीवनी।
शोषाती देखी सरितने करुणाभीना हृदये करी,
मुनिकुन्द संजीवनी समयप्राभृत तणे भाजन भरी॥

अनुष्टुप

कुन्दकुन्द रच्युं शास्त्र, साथिया अमृते पूर्या,
ग्रंथाधिराज! तारामां भावो ब्रह्मांडना भर्या।

शिखरिणी

अहो! वाणी तारी प्रशमरस-भावे नितरती,
मुमुक्षुने पाती अमृतरस अंजलि भरी भरी।
अनादिनी मूर्छा विष तणी त्वराथी उतरती,
विभावेथी थंभी स्वरूप भणी दौड़े परिणती॥

शार्दुलविक्रीड़ित

तूं छे निश्चयग्रन्थ, भङ्ग सघला व्यवहारना भेदवा,
तूं प्रज्ञाछीणी ज्ञानने उदयनी संधि सहु छेदवा।
साथी साधकनो, तूं भानु जगनो, संदेश महावीरनो,
विसामो भवक्लांतना हृदयनो, तुं पंथ मुक्ति तणो।

वंसततिलका

सूण्ये तने रसनिबंध शिथिल थाय,
जाण्ये तने हृदय ज्ञानी तणां जणांय।
तूं रुचतां जगतनी रुचि आलसे सौ,
तूं रीझतां सकलज्ञायकदेव रीझे॥

अनुष्टुप्

बनावूं पत्र कुन्दननां, रत्नोंना अक्षरो लखी,
तथापि कुन्दसूत्रोंना, अंकाये मूल्य ना कदी॥

– श्री हिम्मतलाल जेठालाल शाह

❐❐❐

आत्मा की सैंतालीस शक्तियाँ

आचार्य अमृतचन्द्र देव – श्री आत्मख्याति टीका : श्री समयसार जी

1. आत्मद्रव्य के कारणभूत चैतन्यमात्र भावका धारण जिसका लक्षण है ऐसी **जीवत्वशक्ति** ।
2. अजड़त्वस्वरूप **चितिशक्ति** ।
3. अनाकार उपयोगमयी **दृशिशक्ति**।
4. साकार उपयोगमयी **ज्ञानशक्ति** ।
5. अनाकुलता जिसका लक्षण है ऐसी **सुखशक्ति** ।
6. स्वरूप की रचना की सामर्थ्यरूप **वीर्यशक्ति** ।
7. जिसका प्रताप अखंडित है ऐसे स्वातंत्र्य से शोभायमानपना जिसका लक्षण है ऐसी **प्रभुत्वशक्ति** ।
8. सर्व भावों में व्यापक ऐसे एक भावरूप **विभुत्वशक्ति**।
9. समस्त विश्व के सामान्य भाव को देखने रूप परिणमित ऐसे आत्मदर्शनमयी **सर्वदर्शित्वशक्ति** ।
10. समस्त विश्व के विशेष भावों को जानने रूप से परिणमित ऐसे आत्मज्ञानमयी **सर्वज्ञत्वशक्ति** ।

11. अमूर्तिक आत्मप्रदेशों में प्रकाशमान लोकालोक के आकारों से मेचक ऐसा उपयोग जिसका लक्षण है ऐसी **स्वच्छत्वशक्ति** ।
12. स्वयं प्रकाशमान विशद ऐसी स्वसंवेदनमयी **प्रकाशशक्ति** ।
13. क्षेत्र और काल से अमर्यादित ऐसी चिद्विलासस्वरूप **असंकुचितविकासत्वशक्ति** ।
14. जो अन्य से नहीं किया जाता और अन्य को नहीं करता ऐसे एक द्रव्यस्वरूप **अकार्यकारणत्वशक्ति** ।
15. पर और स्व जिनके निमित्त हैं ऐसे ज्ञेयाकारों तथा ज्ञानाकारों को ग्रहण करने के और ग्रहण कराने के स्वभावरूप **परिणम्य परिणामकत्वशक्ति**।
16. जो कम-बढ़ नहीं होता ऐसे स्वरूप में नियतत्वरूप **त्यागोपादान शून्यत्वशक्ति** ।
17. षट्स्थानपतित वृद्धिहानिरूप से परिणमित, स्वरूप-प्रतिष्ठत्व का कारण रूप ऐसा जो विशिष्ट गुण है उस स्वरूप **अगुरुलघुत्वशक्ति** ।
18. क्रमवृत्तिरूप और अक्रमवृत्तिरूप वर्तन जिसका लक्षण है ऐसी **उत्पादव्ययध्रुवत्वशक्ति** ।

19. द्रव्य के स्वभावभूत ध्रौव्य-व्यय उत्पाद से आलिंगित (स्पर्शित), सदृश और विसदृश जिसका रूप है ऐसे एक अस्तित्वमात्रमयी **परिणामशक्ति**।
20. कर्मबंध के अभाव से व्यक्त किये गये, सहज, स्पर्शादिशून्य ऐसे आत्मप्रदेश स्वरूप **अमूर्तत्वशक्ति**।
21. समस्त कर्मों के द्वारा किये गये ज्ञातृत्वमात्र से भिन्न जो परिणाम उन परिणामों के करण के उपरमस्वरूप **अकर्तृत्वशक्ति**।
22. समस्त कर्मों के किये गये ज्ञातृत्व मात्र से भिन्न परिणामों के अनुभव की उपरमस्वरूप **अभोक्तृत्वशक्ति**।
23. समस्त कर्मों के उपरम से प्रवृत्त आत्मप्रदेशों की निस्पंदतास्वरूप **निष्क्रियत्वशक्ति**।
24. जो अनादि संसार से लेकर संकोच विस्तार को प्राप्त होते हैं और जो चरम शरीर के परिमाण से कुछ न्यून परिमाण से अवस्थित होता है ऐसा लोकाकाश के माप जितना मापवाला आत्म-अवयवत्व जिसका लक्षण है ऐसी **नियतप्रदेशत्वशक्ति**।
25. सर्व शरीरों में एक स्वरूपात्मक ऐसी **स्वधर्मव्यापकत्वशक्ति**।

26. स्व-पर के समान, असमान और समानासमान ऐसे तीन प्रकार के भावों की धारण स्वरूप साधारण असाधारण **साधारणा साधारण धर्मत्वशक्ति**।
27. विलक्षण अनंत स्वभावों से भावित ऐसा एक भाव जिसका लक्षण है ऐसी **अनंतधर्मत्वशक्ति।**
28. तद्रूपमयता और अतद्रूपमयता जिसका लक्षण है ऐसी **विरुद्धधर्मत्वशक्ति**।
29. तद्रूप भवनरूप ऐसी **तत्त्वशक्ति**।
30. अतद्रूप भवनरूप ऐसी **अतत्त्वशक्ति।**
31. अनेक पर्यायों में व्यापक ऐसी एकद्रव्यमयतारूप **एकत्वशक्ति**।
32. एक द्रव्य से व्याप्य जो अनेक पर्यायें उस मयपनेरूप **अनेकत्वशक्ति**।
33 विद्यमान अवस्थायुक्ततारूप **भावशक्ति**।
34. शून्य अवस्थायुक्ततारूप **अभावशक्ति**।
35. भवते हुए पर्याय के व्ययरूप **भावाभावशक्ति**।
36. नहीं भवते हुए पर्याय के उदयरूप **अभावभावशक्ति**।
37. भवते हुए पर्याय के भवनरूप **भावभावशक्ति**।
38. नहीं भवते हुए पर्याय के अभवनरूप **अभावाभावशक्ति**।

39. कारकों के अनुसार जो क्रिया उससे रहित भवनमात्रमयी **भावशक्ति**।
40. कारकों के अनुसार परिणमित होने रूप भावमयी **क्रियाशक्ति**।
41. प्राप्त किया जाता जो सिद्धरूप भाव उसमयी **कर्मशक्ति**।
42. होनेपनरूप और सिद्धरूप भाव के भावकत्वमयी **कर्तृत्वशक्ति**।
43. भवते हुए भाव के भवन के साधकतमपनेमयी **करणशक्ति।**
44. अपने द्वारा दिया जाता जो भाव उसके उपेयत्वमय **संप्रदानशक्ति**।
45. उत्पाद व्यय से आलिंगित भाव का अपाय होने से हानि को प्राप्त न होने वाले ध्रुवत्वमयी **अपादानशक्ति**।
46. भाव्यमान भाव के आधारत्वमयी **अधिकरणशक्ति**।
47. स्वभावमात्र स्व-स्वामित्वमयी **संबंधशक्ति**।

❐❐❐

https://www.AtmaDharma.com/ https://www.AtmaDharma.org/

आत्मा के सैंतालीस नय

आचार्य अमृतचन्द्र देव - श्री तत्त्वप्रदीपिका टीका : श्री प्रवचनसार जी

'यह आत्मा कौन है और कैसे प्राप्त किया जाता है' - ऐसा प्रश्न किया जाये तो इसका उत्तर कहा जा चुका है और पुनः कहते है :-

प्रथम तो, आत्मा वास्तव में चैतन्य सामान्य से व्याप्त अनन्त धर्मों का अधिष्ठाता (स्वामी) एक द्रव्य है, क्योंकि अनन्त धर्मों में व्याप्त होने वाले जो अनन्त नय हैं उनमें व्याप्त होने वाला जो एक श्रुतज्ञानस्वरूप प्रमाण है, उस प्रमाणपूर्वक स्वानुभव से (वह आत्मद्रव्य) प्रमेय होता है (-ज्ञात होता है)।

1. वह आत्मद्रव्य **द्रव्यनय** से, पटमात्र की भाँति, चिन्मात्र है ।
2. आत्मद्रव्य **पर्यायनय** से, तंतुमात्र की भाँति, दर्शनज्ञानादिमात्र है
3. आत्मद्रव्य **अस्तित्वनय** से स्वद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से अस्तित्व वाला है; - लोहमय, डोरी और धनुष के मध्य में स्थित, संधानदशा में रहे हुए और लक्ष्योन्मुखबाण की भाँति।
4. आत्मद्रव्य **नास्तित्वनय** से परद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से नास्तित्व वाला है; - अलोहमय, डोरी और धनुष के मध्य में नहीं स्थित, संधानदशा में न रहे हुए और अलक्ष्योन्मुख ऐसे पहले के बाण की भांति।

5. आत्मद्रव्य **अस्तित्वनास्तित्वनय** से क्रमशः स्वपरद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से अस्तित्व-नास्तित्व वाला है; - लोहमय तथा अलोहमय, डोरी और धनुष के मध्य में स्थित तथा डोरी और धनुष के मध्य में नहीं स्थित, संधान अवस्था में रहे हुए तथा संधान अवस्था में न रहे हुए और लक्ष्योन्मुख तथा अलक्ष्योन्मुख ऐसे पहले के बाण की भाँति।

6. आत्मद्रव्य **अवक्तव्यनय** से युगपत् स्वपरद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से अवक्तव्य है; - लोहमय तथा अलोहमय, डोरी और धनुष के मध्य में स्थित तथा डोरी और धनुष के मध्य में नहीं स्थित, संधान अवस्था में रहे हुए तथा संधान अवस्था में न रहे हुए और लक्ष्योन्मुख तथा अलक्ष्योन्मुख ऐसे पहले के बाण की भाँति।

7. आत्मद्रव्य **अस्तित्व-अवक्तव्यनय** से स्वद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से तथा युगपत् स्वपरद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से अस्तित्व वाला-अवक्तव्य है; - लोहमय, डोरी और धनुष के मध्य में स्थित, संधान अवस्था में रहे हुए और लक्ष्योन्मुख ऐसे तथा लोहमय तथा अलोहमय, डोरी और धनुष के मध्य में स्थित तथा डोरी और धनुष के मध्य में नहीं स्थित, संधान अवस्था में रहे

हुए तथा संधान अवस्था में नहीं रहे हुए और लक्ष्योन्मुख तथा अलक्ष्योन्मुख ऐसे पहले के बाण की भाँति।

8. आत्मद्रव्य **नास्तित्व-अवक्तव्यनय** से परद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से तथा युगपत् स्वपरद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से नास्तित्ववाला-अवक्तव्य है; -अलोहमय, डोरी और धनुष के मध्य में नहीं स्थित, संधान अवस्था में रहे हुए और अलक्ष्योन्मुख ऐसे तथा लोहमय तथा अलोहमय, डोरी और धनुष के मध्य में स्थित तथा डोरी और धनुष के मध्य में नहीं स्थित, संधान अवस्था में रहे हुए तथा संधान अवस्था में न रहे हुए और लक्ष्योन्मुख तथा अलक्ष्योन्मुख ऐसे पहले के बाण की भाँति।

9. आत्मद्रव्य **अस्तित्व-नास्तित्व-अवक्तव्यनय** से स्वद्रव्यक्षेत्र कालभाव से, परद्रव्यक्षेत्र-काल-भाव से तथा युगपत् स्वपरद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से अस्तित्ववाला-नास्तित्ववाला अवक्तव्य है; - लोहमय, डोरी और धनुष के मध्य में स्थित, संधान अवस्था में रहे हुए और लक्ष्योन्मुख ऐसे, - अलोहमय, डोरी और धनुष के मध्य में नहीं स्थित, संधान अवस्था में न रहे हुए और अलक्ष्योन्मुख ऐसे तथा लोहमय तथा अलोहमय, डोरी

और धनुष के मध्य में स्थित तथा प्रत्यञ्चा और धनुष के मध्य में नहीं स्थित, संधान अवस्था में रहे हुए तथा संधान अवस्था में न रहे हुए और लक्ष्योन्मुख तथा अलक्ष्योन्मुख ऐसे पहले के बाण की भाँति।

10. आत्मद्रव्य **विकल्पनय** से बालक, कुमार और वृद्ध ऐसे एक पुरुष की भाँति, सविकल्प है ।
11. आत्मद्रव्य **अविकल्पनय** से, एक पुरुषमात्र की भाँति, अविकल्प है।
12. आत्मद्रव्य **नामनय** से, नामवाले की भाँति, शब्दब्रह्म को स्पर्श करने वाला है ।
13. आत्मद्रव्य **स्थापनानय** से, मूर्तिपने की भाँति, सर्व पुद्गलों का अवलम्बन करने वाला है ।
14. आत्मद्रव्य **द्रव्यनय** से बालक सेठ की भाँति और श्रमण राजा की भाँति, अनागत और अतीत पर्याय से प्रतिभासित होता है ।
15. आत्मद्रव्य **भावनय** से, पुरुष के समान प्रवर्तमान स्त्री की भाँति, तत्काल की पर्यायरूप से उल्लसित–प्रकाशित–प्रतिभासित होता है।
16. आत्मद्रव्य **सामान्यनय** से, हार–माला–कंठी के डोरे की भाँति, व्यापक है ।

https://www.AtmaDharma.com/ https://www.AtmaDharma.org/

17. आत्मद्रव्य **विशेषनय** से, उसके एक मोती की भाँति, अव्यापक है।
18. आत्मद्रव्य **नित्यनय** से, नट की भाँति, अवस्थायी है ।
19. आत्मद्रव्य **अनित्यनय** से, राम–रावण की भाँति, अनवस्थायी है
20. आत्मद्रव्य **सर्वगतनय** से, खुली हुई आँख की भाँति, सर्ववर्ती है।
21. आत्मद्रव्य **असर्वगतनय** से, मींची हुई आँख की भाँति, आत्मवर्ती है।
22. आत्मद्रव्य **शून्यनय** से, शून्य घर की भाँति, एकाकी भासित होता है।
23. आत्मद्रव्य **अशून्यनय** से, लोगों से भरे हुए जहाज की भाँति, मिलित भासित होता है।
24. आत्मद्रव्य **ज्ञानज्ञेय–अद्वैतनय** से महान ईंधन समूह रूप परिणत अग्नि की भाँति, एक है।
25. आत्मद्रव्य **ज्ञानज्ञेयद्वैतनय** से, पर के प्रतिबिम्बों से संपृक्त दर्पण की भाँति, अनेक हैं ।
26. आत्मद्रव्य **नियतिनय** से नियतस्वभावरूप भासित होता है, जिसकी उष्णता नियमित होती है ऐसी अग्नि की भाँति।
27. आत्मद्रव्य **अनियतिनय** से अनियत स्वभाव रूप भासित होता है, जिसके उष्णता नियति से नियमित नहीं है ऐसे पानी के भाँति।

28. आत्मद्रव्य **स्वभावनय** से संस्कार को निरर्थक करने वाला है जिसकी किसी ने नोंक नहीं निकाली, ऐसे पैने काँटे की भाँति।

29. आत्मद्रव्य **अस्वभावनय** से संस्कार को सार्थक करने वाला, जिसकी स्वभाव से नोंक नहीं होती, किन्तु संस्कार करके लुहार के द्वारा नोंक निकाली गई हो ऐसे पैने बाण की भांति।

30. आत्मद्रव्य **कालनय** से जिसकी सिद्धि समय पर आधार रखती है ऐसा है, गर्मी के दिनों के अनुसार पकने वाले आम्रफल की भाँति।

31. आत्मद्रव्य **अकालनय** से जिसकी सिद्धि समय पर आधार नहीं रखती ऐसा है, कृत्रिम गर्मी से पकाये गये आम्रफल की भाँति।

32. आत्मद्रव्य **पुरुषकारनय** से जिसकी सिद्धि यत्नसाध्य है ऐसा है, जैसे पुरुषकार से नींबू का वृक्ष प्राप्त होता है ऐसे पुरुषकारवादी की भाँति।

33. आत्मद्रव्य **दैवनय** से जिसकी सिद्धि अयत्नसाध्य है ऐसा है; पुरुषकारवादी द्वारा प्रदत्त नींबू के वृक्ष के भीतर से जिसे माणिक प्राप्त हो जाता है ऐसे दैववादी की भाँति।

34. आत्मद्रव्य **ईश्वरनय** से परतंत्रता भोगने वाला है, धाय की दुकान पर दूध पिलाये जाने वाले राहगीर के बालक की भाँति।

35. आत्मद्रव्य **अनीश्वरनय** से स्वतंत्रता भोगने वाला है, हिरन को स्वच्छन्दता पूर्वक फाड़कर खा जाने वाले सिंह की भाँति।

36. आत्मद्रव्य **गुणीनय** से गुणग्राही है, शिक्षक के द्वारा जिसे शिक्षा दी जाती है ऐसे कुमार की भाँति।

37. आत्मद्रव्य **अगुणीनय** से केवल साक्षी ही है, जिसे शिक्षक के द्वारा शिक्षा दी जा रही है ऐसे कुमार को देखने वाले पुरुष की भाँति।

38. आत्मद्रव्य **कर्तृनय** से, रँगरेज की भाँति, रागादि परिणाम का कर्ता है।

39. आत्मद्रव्य **अकर्तृनय** से केवल साक्षी ही है, अपने कार्य में प्रवृत्त रँगरेज को देखने वाले पुरुष की भाँति।

40. आत्मद्रव्य **भोक्तृनय** से सुखदुःखादि को भोगता है, हितकारी-अहितकारी अन्न को खाने वाले रोगी की भाँति।

41. आत्मद्रव्य **अभोक्तृनय** से केवल साक्षी ही है, हितकारी-अहितकारी अन्न को खाने वाले रोगी को देखने वाले वैद्य की भाँति।

42. आत्मद्रव्य **क्रियानय** से अनुष्ठान की प्रधानता से सिद्धि सधे ऐसा है, खम्भे से सिर फूट जाने पर दृष्टि उत्पन्न होकर जिसे निधान प्राप्त हो जाय ऐसे अंध की भाँति।

43. आत्मद्रव्य **ज्ञाननय** से विवेक की प्रधानता से सिद्धि सधे ऐसा है; मुट्ठीभर चने देकर चिंतामणि–रत्न खरीदने वाले घर के कोने में बैठे हुए व्यापारी की भाँति।

44. आत्मद्रव्य **व्यवहारनय** से बंध और मोक्ष में द्वैत का अनुसरण करने वाला बंधक है, और मोचक ऐसे अन्य परमाणु के साथ संयुक्त होने वाले और उससे वियुक्त होने वाले परमाणु की भाँति।

45. आत्मद्रव्य **निश्चयनय** से बंध और मोक्ष में अद्वैत का अनुसरण करने वाला है, अकेले बध्यमान और मुच्यमान ऐसे बंधमोक्षोचित्त स्निग्धत्वरूक्षत्वगुणरूप परिणत परमाणु की भाँति।

46. आत्मद्रव्य **अशुद्धनय** से, घट और रामपात्र से विशिष्ट मिट्टी मात्र की भाँति, सोपाधि स्वभाव वाला है।

47. आत्मद्रव्य **शुद्धनय** से, केवल मिट्टी मात्र की भाँति, निरुपाधि स्वभाव वाला है।

❐❐❐

समयसार की प्रथम १६ गाथाएँ

1. **वंदित्तु सव्वसिद्धे धुवमचलमणोवमं गदिं पत्ते।**
वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुदकेवलीभणिदं॥ १॥
ध्रुव अचल अरु अनुपम गति, पाये हुए सब सिद्धको,
मैं वंद श्रुतकेवलिकथित, कहूँ समयप्राभृतको अहो॥ १॥

2. **जीवो चरित्तदंसणणाणट्ठिदो तं हि ससमयं जाण।**
पोग्गलकम्मपदेसट्ठिदं च तं जाण परसमयं॥ २॥
जीव चरितदर्शनज्ञानस्थित, स्वसमय निश्चय जानना,
स्थित कर्मपुद्गलके प्रदेशों, परसमय जीव जानना॥ २॥

3. **एयत्तणिच्छयगदो समओ सव्वत्थ सुंदरो लोगे।**
बंधकहा एयत्ते तेण विसंवादिणी होदि॥ ३॥
एकत्व-निश्चय गत समय, सर्वत्र सुंदर लोक में।
उससे बने बंधनकथा, जु विरोधिनी एकत्व में॥ ३॥

4. **सुदपरिचिदाणुभूदा सव्वस्स वि कामभोगबंधकहा।**
एयत्तस्सुवलंभो णवरि ण सुलहो विहत्तस्स॥ ४॥
है सर्व श्रुत-परिचित-अनुभूत, भोगबंधनकी कथा।
परसे जुदा एकत्वकी, उपलब्धि केवल सुलभ ना॥ ४॥

5. तं एयत्तविहत्तं दाएहं अप्पणो सविहवेण।
जदि दाएज्ज पमाणं चुक्केज्ज छलं ण घेत्तव्वं ॥ ५ ॥

दर्शाऊँ एक विभक्तको, आत्मातने निज विभवसे।
दर्शाऊँ तो करना प्रमाण, न छल ग्रहो स्खलना बने ॥ ५ ॥

6. ण वि होदि अप्पमत्तो ण पमत्तो जाणगो दु जो भावो।
एवं भणंति सुद्धं णादो जो सो दु सो चेव ॥ ६ ॥

नहिं अप्रमत्त प्रमत्त नहीं, जो एक ज्ञायक भाव है।
इस रीति शुद्ध कहाय अरु, जो ज्ञात वो तो वो हि है ॥ ६ ॥

7. ववहारेणुवदिस्सदि णाणिस्स चरित्त दंसणं णाणं।
ण वि णाणं ण चरित्तं ण दंसणं जाणगो सुद्धो ॥ ७ ॥

चारित्र, दर्शन, ज्ञान भी, व्यवहार कहता ज्ञानी के।
चारित्र नहिं, दर्शन नहीं, नहिं ज्ञान, ज्ञायक शुद्ध है ॥ ७ ॥

8. जह ण वि सक्कमणज्जो अणज्जभासं विणा दु गाहेदुं।
तह ववहारेण विणा परमत्थुवदेसणमसक्कं ॥ ८ ॥

भाषा अनार्य बिना न, समझाना ज्यु शक्य अनार्य को।
व्यवहार बिन परमार्थका, उपदेश होय अशक्य यों ॥ ८ ॥

9. जो हि सुदेणहिगच्छदि अप्पाणमिणं तु केवलं सुद्धं।
तं सुदकेवलिमिसिणो भणंति लोयप्पदीवयरा॥ ९॥

इस आत्म को श्रुत से नियत, जो शुद्ध केवल जानते।
ऋषिगण प्रकाशक लोक के, श्रुतकेवली उसको कहें॥ ९॥

10. जो सुदणाणं सव्वं जाणदि सुदकेवलिं तमाहु जिणा।
णाणं अप्पा सव्वं जम्हा सुदकेवली तम्हा॥ १०॥

श्रुतज्ञान सब जानें जु, जिन श्रुतकेवली उसको कहे।
सब ज्ञान सो आत्मा हि है, श्रुतकेवली उससे बने॥ १०॥

11. ववहारोभूदत्थो भूदत्थो देसिदो दु सुद्धणओ।
भूदत्थमस्सिदो खलु सम्मादिट्ठी हवदि जीवो॥ ११॥

व्यवहारनय अभूतार्थ दर्शित, शुद्धनय भूतार्थ है।
भूतार्थ आश्रित आत्मा, सदृष्टि निश्चय होय है॥ ११॥

12. सुद्धो सुद्धादेसो णादव्वो परमभावदरिसीहिं।
ववहारदेसिदा पुण जे दु अपरमे ट्ठिदा भावे॥ १२॥

देखै परम जो भाव उसको, शुद्धनय ज्ञातव्य है।
ठहरा जु अपरमभाव में, व्यवहार से उपदिष्ट है॥ १२॥

13. **भूदत्थेणाभिगदा जीवाजीवा य पुण्णपावं च।**
आसवसंवरणिज्जरबंधो मोक्खो य सम्मत्तं॥ १३॥

भूतार्थ से जाने अजीव जीव, पुण्य पाप अरु निर्जरा।
आस्रव संवर बंध मुक्ति, ये हि समकित जानना॥ १३॥

14. **जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अणण्णयं णियदं।**
अविसेसमसंजुत्तं तं सुद्धणयं वियाणीहि॥ १४॥

अनबद्धस्पृष्ट, अनन्य अरु, जो नियत देखे आत्म को।
अविशेष, अनसंयुक्त उसको शुद्धनय तू जानजो॥ १४॥

15. **जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अणण्णमविसेसं।**
अपदेससंतमज्झं पस्सदि जिणसासणं सव्वं॥ १५॥

अनबद्धस्पृष्ट, अनन्य, जो अविशेष देखे आत्मको,
वो द्रव्य और जु भाव, जिनशासन सकल देखे अहो॥ १५॥

16. **दंसणणाणचरित्ताणि सेविदव्वाणि साहुणा णिच्चं।**
ताणि पुण जाण तिण्णि वि अप्पाणं चेव णिच्छयदो॥ १६॥

दर्शनसहित नित ज्ञान अरु, चारित्र साधु सेविये।
पर ये तीनों आत्मा ही केवल, जान निश्चयदृष्टि में॥ १६॥

❐ ❐ ❐

अलिंगग्रहण के २० बोल

(श्री प्रवचनसार जी गाथा - १७२)

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं॥ १७२॥

अन्वयार्थ :- (जीवम्) जीव को (अरसम्) अरस, (अरूपम्) अरूप (अगंधम्) अगंध, (अव्यक्तम्) अव्यक्त, (चेतनागुणम्) चेतनागुणयुक्त, (अशब्दम्) अशब्द, (अलिंगग्रहणम्) अलिंगग्रहण (लिंग द्वारा ग्रहण न होने योग्य) और (अनिर्दिष्टसंस्थानम्) जिसका कोई संस्थान नहीं कहा गया है ऐसा (जानीहि) जानो ॥१७२॥

जहाँ 'अलिंगग्राह्य' करना है वहाँ जो 'अलिंगग्रहण' कहा है, वह बहुत से अर्थों की प्रतिपत्ति (प्राप्ति, प्रतिपादन) करने के लिये है। वह इस प्रकार है :-

1. ग्राहक (-ज्ञायक) जिसके लिंगों के द्वारा अर्थात् इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण (-जानना) नहीं होता वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा अतीन्द्रियज्ञानमय**' है इस अर्थ की प्राप्ति होती है।

2. ग्राह्य (ज्ञेय) जिसका लिंगों के द्वारा अर्थात् इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण (–जानना) नहीं होता वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा इन्द्रिय प्रत्यक्ष का विषय नहीं है**' इस अर्थ की प्राप्ति होती है।
3. जैसे धुँए से अग्नि का ग्रहण (ज्ञान) होता है, उसी प्रकार लिंग द्वारा, अर्थात् इन्द्रियगम्य (–इन्द्रियों से जानने योग्य चिन्ह) द्वारा जिसका ग्रहण नहीं होता वह अलिंगग्रहण है। इस प्रकार '**आत्मा इन्द्रिय प्रत्यक्ष पूर्वक अनुमान का विषय नहीं है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।
4. दूसरों के द्वारा–मात्र लिंग द्वारा ही जिसका ग्रहण नहीं होता वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा अनुमेय मात्र (केवल अनुमान से ही ज्ञात होने योग्य) नहीं है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।
5. जिसके लिंग से ही पर का ग्रहण नहीं होता वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा अनुमातामात्र (केवल अनुमान करने वाला हो) नहीं है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।
6. जिसके लिंग के द्वारा नहीं किन्तु स्वभाव के द्वारा ग्रहण होता है वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा प्रत्यक्ष ज्ञाता है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।

7. जिसके लिंग द्वारा अर्थात् उपयोग नामक लक्षण द्वारा ग्रहण नहीं है अर्थात् ज्ञेय पदार्थों का आलम्बन नहीं है, वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा के बाह्य पदार्थों का आलम्बन वाला ज्ञान नहीं है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।
8. जो लिंग को अर्थात् उपयोग नामक लक्षण को ग्रहण नहीं करता अर्थात् स्वयं (कहीं बाहर से) नहीं लाता सो अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा जो कहीं से नहीं लाया जाता ऐसे ज्ञान वाला है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।
9. जिसे लिंग का अर्थात् उपयोग नामक लक्षण का ग्रहण अर्थात् पर से हरण नहीं हो सकता (–अन्य से नहीं ले जाया जा सकता) सो अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा के ज्ञान का हरण नहीं किया जा सकता**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।
10. जिसे लिंग में अर्थात् उपयोग नामक लक्षण में ग्रहण अर्थात् सूर्य की भाँति उपराग (–मलिनता, विकार) नहीं है वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा शुद्धोपयोग स्वभावी है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।
11. लिंग द्वारा अर्थात् उपयोग नामक लक्षण द्वारा ग्रहण अर्थात् पौद्गलिक कर्म का ग्रहण जिसके नहीं है, वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा द्रव्यकर्म से असंयुक्त (असंबद्ध) है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।

12. जिसे लिंगों के द्वारा अर्थात् इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण अर्थात् विषयों का उपभोग नहीं है सो अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा विषयों का उपभोक्ता नहीं है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।
13. लिंग द्वारा अर्थात् मन अथवा इन्द्रियादि लक्षण के द्वारा ग्रहण अर्थात् जीवत्व को धारण कर रखना जिसके नहीं है वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा शुक्र और आर्तवको अनुविधायी (–अनुसार होने वाला) नहीं है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।
14. लिंग का अर्थात् मेहनाकार (–पुरुषादि की इन्द्रिय का आकार) का ग्रहण जिसके नहीं है सो अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा लौकिक साधन मात्र नहीं है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।
15. लिंग के द्वारा अर्थात् अमेहनाकार के द्वारा जिसका ग्रहण अर्थात् लोक में व्यापकत्व नहीं है सो अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा पाखण्डियों के प्रसिद्ध साधनरूप आकार वाला–लोकव्याप्ति वाला नहीं है**' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।
16. जिसके लिंगों का अर्थात् स्त्री, पुरुष और नपुंसक वेदों का ग्रहण नहीं है वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार '**आत्मा द्रव्य से तथा**

भाव से स्त्री, पुरुष तथा नपुंसक नहीं है' इस अर्थ की प्राप्ति होती है।

17. लिंगों का अर्थात् धर्मचिन्हों का ग्रहण जिसके नहीं है वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार **'आत्मा के बहिरंग यतिलिंगों का अभाव है'** इस अर्थ की प्राप्ति होती है।

18. लिंग अर्थात् गुण ऐसा जो ग्रहण अर्थात् अर्थावबोध (पदार्थज्ञान) जिसके नहीं है सो अलिंगग्रहण है; इस प्रकार **'आत्मा गुणविशेष से आलिंगित न होने वाला ऐसा शुद्ध द्रव्य है'** ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।

19. लिंग अर्थात् पर्याय ऐसा जो ग्रहण, अर्थात् अर्थावबोधविशेष जिसके नहीं है सो अलिंगग्रहण है; इस प्रकार **'आत्मा पर्याय विशेष से आलिंगित न होने वाला ऐसा शुद्ध द्रव्य है'** ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है।

20. लिंग अर्थात् प्रत्यभिज्ञान का कारण ऐसा जो ग्रहण अर्थात् अर्थावबोध सामान्य जिसके नहीं है वह अलिंगग्रहण है; इस प्रकार **'आत्मा द्रव्य से नहीं आलिंगित ऐसी शुद्ध पर्याय है'** ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है॥

अव्यक्त के ६ बोल

(श्री समयसार जी गाथा - ४९)

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं॥ ४९॥

अब 'अव्यक्त' विशेषण को सिद्ध करते हैं :-

1. छह द्रव्यस्वरूप लोक जो ज्ञेय है और व्यक्त है उससे जीव अन्य है इसलिये अव्यक्त है।
2. कषायों का समूह जो भावकभाव व्यक्त है उससे जीव अन्य है इसलिये अव्यक्त है।
3. चित्सामान्य में चैतन्य की समस्त व्यक्तियाँ निमग्न हैं इसलिये अव्यक्त है।
4. क्षणिक व्यक्तिमात्र नहीं है इसलिये अव्यक्त है।
5. व्यक्तता तथा अव्यक्तता एकमेक मिश्रित रूप से प्रतिभासित होने पर भी वह केवल व्यक्तता को ही स्पर्श नहीं करता इसलिये अव्यक्त है।
6. स्वयं अपने से ही बाह्याभ्यंतर स्पष्ट अनुभव में आ रहा है तथापि व्यक्तता के प्रति उदासीनरूप से प्रकाशमान है इसलिये अव्यक्त है।

❐❐❐

24 तीर्थंकर

1. श्री ऋषभदेवजी
2. श्री अजितनाथजी
3. श्री संभवनाथजी
4. श्री अभिनन्दनजी
5. श्री सुमतिनाथजी
6. श्री पद्मप्रभजी
7. श्री सुपार्श्वनाथजी
8. श्री चन्द्रप्रभजी
9. श्री पुष्पदंतजी
10. श्री शीतलनाथजी
11. श्री श्रेयांसनाथजी
12. श्री वासुपूज्यजी
13. श्री विमलनाथजी
14. श्री अनंतनाथजी

15. श्री धर्मनाथजी
16. श्री शान्तिनाथजी
17. श्री कुन्थुनाथजी
18. श्री अरनाथजी
19. श्री मल्लिनाथजी
20. श्री मुनिसुव्रतनाथजी
21. श्री नमिनाथजी
22. श्री नेमिनाथजी
23. श्री पार्श्वनाथजी
24. श्री महावीरजी

पञ्च बालयति तीर्थंकर

1. श्री वासुपूज्यजी
2. श्री मल्लिनाथजी
3. श्री पार्श्वनाथजी
4. श्री नेमिनाथजी
5. श्री महावीरजी

जिनागम के 16 आने

छः सामान्य गुणः

1. **अस्तित्व गुण** के कारण द्रव्य का कभी नाश नहीं होता।
2. **वस्तुत्व गुण** के कारण द्रव्य में अर्थक्रिया होती है।
3. **द्रव्यत्व गुण** के कारण द्रव्य की अवस्थायें निरंतर बदलती रहती हैं।
4. **प्रमेयत्व गुण** के कारण द्रव्य किसी न किसी के ज्ञान का विषय अवश्य होता है।
5. **अगुरुलघुत्व गुण** के कारण द्रव्य में द्रव्यपना कायम रहता है अर्थात् एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप नहीं परिणमता, एक गुण दूसरे गुणरूप नहीं परिणमता और द्रव्य में रहने वाले अनंत गुण बिखर-बिखर कर अलग-अलग नहीं हो जाते।
6. **प्रदेशत्व गुण** के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य होता है।

छः कारक :

1. जीव स्वतंत्ररुप से जीवभावको करता होने से जीव स्वयं ही **कर्ता** है ।
2. स्वयं जीवभावरुप से परिणमित होने की शक्तिवाला होने से जीव स्वयं ही **करण** है ।
3. जीवभावको प्राप्त करता – पहुँचता होने से जीवभाव कर्म है अथवा जीवभाव से स्वयं अभिन्न होने से जीव स्वयं ही **कर्म** है ।
4. अपने में से पूर्व भावका व्यय करके (नवीन) जीवभाव करता होने से, जीवद्रव्यरुप ध्रुव रहने से जीव स्वयं ही **अपादान** है ।
5. अपने को जीवभाव देता होने से जीव स्वयं ही **सम्प्रदान** है ।
6. अपने में अर्थात् अपने आधार से जीव भाव करता होने से जीव स्वयं ही **अधिकरण** है ।

चार अभाव

1. वर्तमान पर्याय का पूर्व पर्याय में अभाव **प्रागभाव** है ।
2. वर्तमान पर्याय का आगामी पर्याय में अभाव **प्रध्वंसाभाव** है ।
3. एक पुद्गल द्रव्य की वर्तमान पर्याय में दूसरे पुद्गल द्रव्य की वर्तमान पर्याय का अभाव **अन्योन्याभाव** है ।
4. एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य में अभाव **अत्यन्ताभाव** है ।

श्रीमद् राजचंद्र के दस बोल

1.स्वद्रव्य अन्यद्रव्य भिन्न-भिन्न देखो।

2.स्वद्रव्य के रक्षक शीघ्रता से होओ।

3.स्वद्रव्य के व्यापक शीघ्रता से होओ।

4.स्वद्रव्य के धारक शीघ्रता से होओ।

5.स्वद्रव्य के रमक शीघ्रता से होओ।

6.स्वद्रव्य के ग्राहक शीघ्रता से होओ।

7.स्वद्रव्य की रक्षकता ऊपर लक्ष्य रखो।

8.परद्रव्य की धारकता शीघ्रता से तजो।

9.परद्रव्य की रमणता शीघ्रता से तजो।

10.परद्रव्य की ग्राहकता शीघ्रता से तजो, परभाव से विरक्त हो।

श्री सद्गुरुदेव-स्तुति

(हरिगीत)

संसारसागर तारवा जिनवाणी छे नौका भली,
ज्ञानी सुकानी मळ्या बिना अे नाव पण तारे नहीं;
आ काळमां शुद्धात्मज्ञानी सुकानी बहु-बहु दोह्यलो,
मुज पुण्यराशि फळ्यो अहो! गुरु कहान तुं नाविक मळ्यो.

(अनुष्टुप)

अहो! भक्त चिदात्माना, सीमंधर-वीर-कुंदना!
बाह्यांतर विभवो तारा, तारे नाव मुमुक्षुनां.

(शिखरिणी)

सदा दृष्टि तारी विमळ निज चैतन्य नीरखे,
अने ज्ञप्तिमांही दरव-गुण-पर्याय विलसे;
निजालंबीभावे परिणति स्वरूपे जई भळे,
निमित्तो वहेवारो चिदघन विषे कांई न मळे.

https://www.AtmaDharma.com/ https://www.AtmaDharma.org/

(शार्दूलविक्रीड़ित)

हैयुं 'सत सत, ज्ञान ज्ञान' धबके ने वज्रवाणी छूटे,
जे वज्रे सुमुमुक्षु सत्त्व झळके; परद्रव्य नातो तूटे;
–रागद्वेष रुचे न, जंप न वळे भावेंद्रिमां–अंशमां,
टंकोत्कीर्ण अकंप ज्ञान महिमा हृदये रहे सर्वदा.

(वसंततिलका)

नित्ये सुधाझरण चंद्र! तने नमं हुं,
करुणा अकारण समुद्र! तने नमुं हुं;
हे ज्ञानपोषक सुमेघ! तने नमुं हुं,
आ दासना जीवनशिल्पी! तने नमुं हुं.

(स्रग्धरा)

ऊंडी ऊंडी, ऊंडेथी सुखनिधि सतना वायु नित्ये वहंती,
वाणी चिन्मूर्ति! तारी उर–अनुभवना सूक्ष्म भावे भरेली;
भावो ऊंडा विचारी, अभिनव महिमा चित्तमां लावी लावी,
खोयेलुं रत्न पामुं, –मनरथ मननो; पूरजो शक्तिशाली!

– श्री हिम्मतलाल जेठालाल शाह

❐❐❐

परिशिष्ट-१

आत्मा की सैंतालीस शक्तियाँ

1.जीवत्वशक्ति
2.चितिशक्ति
3.दृशिशक्ति
4.ज्ञानशक्ति
5. सुखशक्ति
6. वीर्यशक्ति
7. प्रभुत्वशक्ति
8. विभुत्वशक्ति
9. सर्वदर्शित्वशक्ति
10.सर्वज्ञत्वशक्ति
11. स्वच्छत्वशक्ति
12. प्रकाशशक्ति
13. असंकुचितविकासत्वशक्ति
14. अकार्यकारणत्वशक्ति
15. परिणम्य परिणामकत्वशक्ति
16. त्यागोपादान शून्यत्वशक्ति
17. अगुरुलघुत्वशक्ति
18. उत्पादव्ययध्रुवत्वशक्ति
19. परिणामशक्ति
20. अमूर्तत्वशक्ति
21. अकर्तृत्वशक्ति
22. अभोक्तृत्वशक्ति
23.निष्क्रियत्वशक्ति
24. नियतप्रदेशत्वशक्ति

25. स्वधर्मव्यापकत्वशक्ति
26. साधारणासाधारणधर्मत्वशक्ति
27. अनंतधर्मत्वशक्ति
28. विरुद्धधर्मत्वशक्ति
29. तत्त्वशक्ति
30.अतत्त्वशक्ति
31. एकत्वशक्ति
32.अनेकत्वशक्ति
33भावशक्ति
34.अभावशक्ति
35.भावाभावशक्ति
36.अभावभावशक्ति
37.भावभावशक्ति
38.अभावाभावशक्ति
39.भावशक्ति
40.क्रियाशक्ति
41.कर्मशक्ति
42.कर्तृत्वशक्ति
43.करणशक्ति
44.संप्रदानशक्ति
45.अपादानशक्ति
46.अधिकरणशक्ति
47.संबंधशक्ति

परिशिष्ट-२

आत्मा के सैंतालीस नय

1.द्रव्यनय

2.पर्यायनय

3.अस्तित्वनय

4.नास्तित्वनय

5.अस्तित्वनास्तित्वनय

6.अवक्तव्यनय

7.अस्तित्व-अवक्तव्यनय

8.नास्तित्व-अवक्तव्यनय

9.अस्तित्व-नास्तित्व-अवक्तव्यनय

10.विकल्पनय

11.अविकल्पनय

12.नामनय

13.स्थापनानय

14.द्रव्यनय

15.भावनय

16.सामान्यनय

17.विशेषनय

18.नित्यनय

19.अनित्यनय

20.सर्वगतनय

21.असर्वगतनय

22.शून्यनय

23.अशून्यनय

24.ज्ञानज्ञेय-अद्वैतनय

25.ज्ञानज्ञेयद्वैतनय

26.नियतिनय

27.अनियतनय

28.स्वभावनय

29.अस्वभावनय

30.कालनय

31.अकालनय

32.पुरुषकारनय

33.दैवनय

34.ईश्वरनय

35.अनीश्वरनय

36.गुणीनय

37.अगुणीनय

38.कर्तृनय

39.अकर्तृनय

40.भोक्तृनय

41.अभोक्तृनय

42.क्रियानय

43.ज्ञाननय

44.व्यवहारनय

45.निश्चयनय

46.अशुद्धनय

47.शुद्धनय

मंगल-क्षण

पूज्य गुरुदेवश्री के साथ मुमुक्षु परिवार करेली

॥ रे गुणवन्ता ज्ञानी! अमृत बरसायो पंचम कालमा! ॥

ॐ अहा! जिसके आंनद के क्षण भर के रसास्वादन में तीनों लोक के सुख विष समान भासित हों, तृण समान तुच्छ लगें, ऐसा भगवान आत्मा है !

ॐ देव-शास्त्र-गुरु ऐसा कहते हैं कि भाई! तेरी महिमा तुझे आये उसमें हमारी महिमा आ जाती है। तुझे अपनी महिमा नहीं आती तो हमारी महिमा भी वास्तव में तुझे नहीं आयी है, हमें तूने पहचाना नहीं है।

ॐ बाहर की विपदा वह वास्तव में विपदा नहीं है और बाहर की सम्पदा वह सम्पदा नहीं है। चैतन्य का विस्मरण ही महान विपदा है और चैतन्य का स्मरण ही वास्तव में सच्ची सम्पदा है।

प्रकाशक -
आध्यात्मिक प्रयोगशाला,
श्री कुंद-कुंद कहान दिगंबर जैन स्वाध्याय मंदिर,
राधावल्लभ वार्ड, करेली, जिला: नरसिंहपुर, (म. प्र.), 487221
aadhyatmikprayogshala@gmail.com
/AadhyatmikPrayogshala @AdhyatmikPrayog